

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Monday, 28 September 2026

कुलदीप यादव : कानपुर की गलियों से भारत के स्पिन युद्ध के नेता तक का सफर

Publisher

Published on 12 Sep 2025



भारतीय क्रिकेट में स्पिन की परंपरा सदियों पुरानी रही है, लेकिन उन खिलाड़ियों की कहानियां हमेशा ही प्रेरणा देती हैं, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों से निकलकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी पहचान बनाई। ऐसे ही एक खिलाड़ी हैं **कुलदीप यादव**, जिनका सफर कानपुर की गलियों से भारत के प्रमुख स्पिनर बनने तक का रोमांचक सफर रहा है।

कुलदीप यादव का जन्म 14 दिसंबर 1994 को कानपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। बचपन से ही उनका आकर्षण क्रिकेट की ओर था। हालांकि संसाधनों की कमी और सीमित प्रशिक्षण सुविधाओं के बावजूद, उन्होंने अपने जुनून और मेहनत से खुद को स्थापित किया। कानपुर की छोटी-छोटी गलियों में उन्होंने गेंद और बल्ले के साथ घंटों अभ्यास किया, जिससे उनके अंदर की प्रतिभा धीरे-धीरे निखरने लगी।

उनकी शुरुआती कोचिंग स्थानीय क्लबों और स्कूल स्तर की टीमों में हुई। यहीं से उन्होंने अपने करियर की नींव रखी। बचपन में ही उनकी ऑफ-ब्रेक और चिन्ना गेंदबाजी की तकनीक ने कोच और साथी खिलाड़ियों का ध्यान खींचा।

कुलदीप का नाम सबसे पहले घरेलू क्रिकेट में **उत्तर प्रदेश रणजी टीम** के लिए खेलते हुए सुर्खियों में आया। यहां उन्होंने अपनी गेंदबाजी कौशल से विपक्षी बल्लेबाजों को परेशान किया। उनके प्रदर्शन ने उन्हें राष्ट्रीय चयनकर्ताओं की नजर में ला दिया। विशेष रूप से उनकी बाएं हाथ की चिन्ना और लेग स्पिन गेंदबाजी ने भारतीय घरेलू क्रिकेट में उन्हें अलग पहचान दिलाई।

कुलदीप यादव ने भारतीय क्रिकेट टीम में पदार्पण 2017 में किया। उनकी बाएं हाथ की विविध स्पिनिंग क्षमता ने चयनकर्ताओं को प्रभावित किया। वनडे और T20 प्रारूप में उनका योगदान महत्वपूर्ण साबित हुआ। उन्होंने कई मैचों में विपक्षी बल्लेबाजों को आउट करने के लिए रणनीति के अनुसार गेंदबाजी की और टीम को निर्णायक जीत दिलाई।

उनकी प्रमुख विशेषता उनका **यादृच्छिक और विविध स्पिन** है। कुलदीप केवल लेग स्पिन या ऑफ स्पिन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनका चिन्ना और फिलपर गेंदबाजी शैली भारतीय क्रिकेट में स्पिन की नई परिभाषा बन गई।

कुलदीप यादव का अंतरराष्ट्रीय करियर उतार-चढ़ाव से भरा रहा है। शुरुआती दिनों में उन्होंने कई शानदार प्रदर्शन किए, लेकिन कभी-कभी चयन से बाहर रहना और टीम में जगह बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने अपनी तकनीक में सुधार किया, फिटनेस पर ध्यान दिया और मानसिक मजबूती के साथ मैदान पर वापसी की।

2018 और 2019 में कुलदीप के प्रदर्शन ने उन्हें भारतीय स्पिन लाइन-अप का अहम हिस्सा बना दिया। विशेष रूप से इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया जैसे टेस्ट सीरीज में उनका योगदान सराहनीय रहा। उनके बाएं हाथ के स्पिन ने कई बार विपक्षी टीमों को परेशान किया और मैच की दिशा बदल दी।

कुलदीप यादव ने सीमित ओवरों के प्रारूप में भी अपनी छाप छोड़ी है। उनकी गेंदबाजी रणनीति और बल्लेबाजों को पढ़ने की क्षमता उन्हें टी20 लीग और वनडे मैचों में प्रभावशाली बनाती है। इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) में उनके प्रदर्शन ने उन्हें घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और मजबूत किया।

विशेषज्ञों का मानना है कि कुलदीप की सफलता का मुख्य कारण उनका निरंतर सुधार और तकनीकी निपुणता है। वे हर मैच के बाद अपने प्रदर्शन का विश्लेषण करते हैं और अगले मैच के लिए रणनीति तैयार करते हैं।

कुलदीप यादव केवल क्रिकेट मैदान तक सीमित नहीं हैं। उनका जीवन युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कई बार कहा कि कठिनाई और सीमित संसाधनों के बावजूद मेहनत और लगन से कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। उन्होंने युवाओं को प्रशिक्षित करने और स्थानीय क्रिकेट अकादमियों में समय देने की पहल की है।

उनकी कहानी यह दिखाती है कि कैसे छोटे शहर के खिलाड़ी भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकते हैं। कानपुर की गलियों से निकलकर भारतीय क्रिकेट का प्रमुख स्पिनर बनना, उनके साहस, समर्पण और मेहनत का प्रमाण है।

आने वाले वर्षों में कुलदीप यादव की भूमिका भारतीय क्रिकेट में और महत्वपूर्ण होने की संभावना है। नए खिलाड़ियों के लिए मेंटर के रूप में, स्पिन रणनीति के विशेषज्ञ के रूप में और टीम की जीत के लिए निर्णायक खिलाड़ी के रूप में उनका योगदान बढ़ता रहेगा। उनके अनुभव और तकनीकी निपुणता से भारतीय स्पिन लाइन-अप और मजबूत होगा।

कुलदीप यादव की कहानी यह साबित करती है कि प्रतिभा, मेहनत और आत्मविश्वास किसी भी चुनौती को पार कर सकती है। कानपुर की गलियों से शुरू हुआ उनका सफर अब पूरी दुनिया के क्रिकेट प्रेमियों के लिए प्रेरणा बन गया है।